लौहित्य साहित्य सेतु: सहयोगी विद्वानों द्वारा पुनरीक्षित द्विभाषिक ई-पत्रिका
वर्ष: 3, संख्या: 4; जनवरी-जून, 2022

कोलाज : थर्टी फर्स्ट

✍ रीतामणि वैश्य

1

आफिस से घर वापस आते हुए वह वाइन शॉप से होकर आया। महीने की अंतिम तारीख थी, तंख्वाह आ चुकी थी। उसने वाइन की एक बड़ी बोतल खरीद ली। दूसरा दिन होता तो उसे अपने को इस स्थिति में पाकर बड़ी खुशी होती। पर आज तो शराब पीकर गाड़ी चलाना मना था। नये मुख्यमंत्री का सख्त निर्देश था। जो भी ड्राइव विथ ड्रिंक करेगा, उसे उनका मेहमान होना पड़ेगा। ऊपर से जुर्माना अलग से। आज तो कहीं वह पार्टी करने जा भी नहीं सकेगा। पर पिये बिना रहा भी नहीं जायेगा। शराब कमबख्त चीज ही ऐसी है कि अकेले पीने में मजा ही नहीं आता। पत्नी शिक्षक की बेटी है,धर्म-कर्म में विश्वास रखनेवाली। शराब का नाम सुनते ही नहाने जाती है। बाइक को किक मारते हुए उसने अपना बेग संभाला और एक्सीलेटर घुमाता हुआ अपने आप से बोल उठा- 'आज उसे ही मनाना पड़ेगा।'

घर पहुँचकर उदास चेहरे के साथ वह अपने कमरे में गया। उसने अपना बेग संभालकर रख दिया। ऐसे भी उसकी पत्नी उस पर बहुत भरोसा रखती है। वह जो भी कहता है, वही मान लेती है। वह कभी पति के बेग की ओर ध्यान नहीं देती।

'ओ जी क्या हुआ? तबीयत तो ठीक है न आपकी?' पति को देखते ही पत्नी बोली।

'बहुत सर दर्द कर रहा है।'

'बहुत ठंढक है। इसीलिए हुआ होगा।रुकिए गरमागरम मांस लाती हूँ। देवरानी ने अभी-अभी पकाया है।'

'सिर्फ मांस?'

'मछली भी बन रही है।'

'हाँ,हाँ,वह सब तो ठीक है। पर मांस और मछली से यह सरदर्द ठीक नहीं होनेवाला है।दो-तीन गोलियाँ ले चुका हूँ अब तक। कुछ असर नहीं हो रहा।मैं क्या

करूँ सर फटा जा रहा है.... मेरे कारण तुम सबका थर्टी फर्स्ट भी चौपट हो गया।'

'इतना भयानक सरदर्द ! ठीक होने का कोई तो उपाय होगा!'

उसे मानो इसी मौके की तलाश थी।

'हमारे ऑफिस के बरबाबू ने कहा था कि उसे भी एक बार ऐसा ही सर दर्द हुआ था।'

'फिर...

'रेड वाइन पीकर ठीक हो गया।'

'छि: वाइन से भी बीमारी ठीक होती है भला?'

'हाँ, मैं भी नहीं मानता। पर हमारा चौकीदार भी आज यही कह रहा था।'

'क्या?'

'यही कि वाइन सरदर्द में अच्छा काम करता है।'

'क्या एक यही उपाय है?'

'पता नहीं, पर आज डॉक्टर भी तो नहीं मिलेगा। हाँ, बरबाबू ने मेरे बेग में एक बोतल रख भी दी है।' उसने कराहते हुए कहा।

'तो कोई बात नहीं। तो आप पी लें। बड़े बुजुर्ग भी कह गये हैं कि जिंदगी के लिए हर शर्त मंजूर होती है।'

'पर मैं अकेले नहीं पीऊँगा। तुम्हें भी मेरा साथ देना होगा।'

'छि: मैं शराब नहीं पीती। और अगर आपको सर दर्द नहीं होता, आपको भी पीने नहीं देती।'

'अरे यह शराब नहीं है। फल का रस ही तो है।' उसने बेग से बोतल निकाली- 'यह अंगूर के रस से बना है। डॉक्टर भी इसे पीने की सलाह देते हैं। स्वास्थ्य के लिए अच्छा है। जाओ,दो ग्लास ले आओ।'

पत्नी रसोईघर की ओर चली।

'और हाँ, भुनी हुई मछलियाँ और मसालेदार मांस भी लाना...ड्राई फ्राय...'

उसने मानो आज बड़ा तीर मार लिया हो। वह बेचैनी से पत्नी का इंतजार करने लगा। कुछ समय बाद पत्नी एक ट्रे में सारी चीजों को लेकर कमरे में पहुँची। उसने बारीकी से मांस ,मछली परोसते हुए कहा- 'वह बार-बार पूछ रही थी। मैंने कहा दवा पिलाना है आपको।'

पति का ध्यान इन सब में नहीं था। उसने बोतल खोली और दोनों ग्लास में दो-

दो पेग उड़ेल दिये। 'शेयर्स' कहता हुआ उसने अपना ग्लास पत्नी के ग्लास से टकरा दिया। पत्नी निर्लिप्त भाव से देख रही थी। पति ने अपना ग्लास टेबल पर रख दिया। पत्नी ने पूछा- 'क्यों? क्या हुआ?'

'नहीं,नहीं। शराब मुझसे नहीं पी जायेगी।'

'अरे यह तो फल का रस है।'

'तो तुम भी पियो न!'

पत्नी ने ग्लास हाथ में उठा लिया तो पति शुरू हो गया। दो-चार घूंट पीने के बाद पत्नी पर नशा चढ़ने लगा। कुछ समय बीत गया और जेठानी रसोई घर नहीं पहुँची तो देवरानी उनके कमरे में आ पहुँची। देवरानी को सामने पाकर दोनों असमंजस में पड़ गये। जेठानी बोली- ' तुम यहाँ?'

'मुझे भैया से कुछ जरूरी बात करनी थी।'

'अभी?' जेठानी कुछ नाराज होकर बोली।

जेठ ने नशीली आँखों से उसकी ओर 'क्या है' के भाव से देखा।

'भैया मुझे भी बहुत सर दर्द हो रहा है। घर में तो दवा दारू हो जाता था, पर जब से शादी हुई है....'अपनी पूरी हिम्मत जुटाकर वह बोली।

अमर ने इशारे से उसे ग्लास लाने को कहा और दो-तीन मिनिट के अंदर जमावड़ा और बढ़ गया था।

घर में किसी को कहीं न पाकर भाई भाभी के कमरे में गया। बाहर से ही उसे उनकी अस्पष्ट बातें सुनी। उसे बड़ा कौतूहल हुआ। वह सीधे कमरे के अंदर चला और भैया को घर की बहुओं के साथ पीते हुए पाया तो मुँह से निकल गया-'आपलोग!'

बात खत्म ही नहीं हुई थी कि तीनों ने आना-अपना ग्लास उठाकर एक साथ एक पर एक घूंट पी लिया। भैया ने खाली बोतल को उल्टा लटकाकर कहा- 'खत्म हो गयी।'

2

नहीं, नहीं। थर्टी फर्स्ट में पार्टी न हो, यह कैसे हो सकता है। पर पार्टी के बाद घर कैसे आये ,यही तो बड़ी चिंता का विषय है। पीते हुए गाड़ी चलाते पाया तो हवालात की सैर करनी होगी। पीने के बाद पैदल चला

भी नहीं जायेगा । अगर मीडियावालों के सामने आ गये तो इज्जत का फ़ालूदा बन जायेगा। कड़ाके की ठंढक पड़ी है। किसी के घर में कोई कैसे इतने लोगों को रख पायेगा। गर्मी का दिन होता तो अलग बात होती, कहीं भी पैर पसार कर पड़े रहते। आज की शाम कैसे मनाया जाये वह इसी सोच में डूबा है। इतने में उसके मोबाइल का रिंगटोन बजने लगा.....चार बोतल वोडका...

'हैलो, दोस्त, हाँ बोल।'

'अरे शाम का क्या सोचा है?'

'यही तो कुछ सोच नहीं पा रहा हूँ।'

'कोई बात नहीं मेरे घर में आ जाना।'

'अरे रात को कैसे वापस आयेंगे?'

'मेरे यहाँ रुक जाना।'

'इतने लोगों को कहाँ रखेगा?'

'यह मुझ पर सौंप। आ जाना। और हाँ कार्टून भरकर माल लाना।'

उसके सर से मानो चिंता का बड़ा पहाड़ हटा। कॉलेज के दिनों से ये सारे एकसाथ थर्टी फर्स्ट मनाते आ रहे हैं, अब इस सिलसिले को इसबार कैसे तोड़ा जाये। सी एम ने तो शराब पीकर गाड़ी चलाने को मना किया है, शराब पीने में तो मनाही नहीं है। तो वे क्यों न पियेंगे?

शाम होते-होते वे सारे दोस्त निर्धारित ठिकाने पर पहुँच गये। सबकुछ बाहर से मंगाया गया था। दोस्त की बीबी को तकलीफ न हो, इसीलिए ऐसा किया गया। वह तो कोई मधुबाला नहीं है कि इन सबकी मांगों को देर रात तक पूरी करती रहेगी।

रात बीत रही थी और पार्टी जम रही थी। वे हंस रहे थे, रो रहे थे,एक दूसरे को गाली दे रहे थे, फिर हँसते थे। घंटों तक ऐसे रहने के बाद नशा ने अपना कमाल दिखाना शुरू किया। वे एक दूसरे पर लुढ़कने लगे। एक ने कहा-' लगता है अब हमें पार्टी खत्म करनी चाहिए। ए,बिस्तर कहाँ लगा है।'

'तेरे बाप ने बिस्तर बना के रखा है क्या मेरे घर में? सो जा यही जमीन पर...' पहले दोस्त ने गरजते हुए कहा।

'अबे तूने तो कहा था कि...'

'अबे कहा था कि ...कि... तुझ पर नहीं चढ़ी है अभी। ख़ाब जानिले चाउले चिरा, बहिब जानिले माटिये पीरा...और शुब जानिले मातिये बिछना। अरे सुन थोड़ी और पी ले। तब न तो बिस्तर की जरूरत

होगी और न ही ठंड का एहसास होगा। उसकी बातों को सभी शराबियों ने ध्यान से सुना और एक-एक बोतल उठा ली। थोड़े समय में ही बोतलें खाली हो गयीं। अचानक से गर्मी का मौसम आ गया। किसी ने अपनी कमीज खोल दी, तो कोई फर्श पर चैन की नींद सो गया। कोई नयी बोतल में मुँह डाल रहा था, तो कोई गा रहा था-

तेरी आँखों के ये जो प्याले हैं,

मेरी अंधेरी रातों के उजाले हैं,

पीता हूँ जाम पर जाम तेरे नाम का,

हम तो शराबी बे-शराब वाले हैं।

'तूने मुझे क्या समझ रखा है? मैंने तेरे दोस्तों की उल्टी क्यों साफ करूंगी। जिसने गंदा किया है, वही साफ करेगा। नहीं तो मैं यहाँ से किसी को हिलने न दूँगी। छि: कैसी बदबू आ रही है। लगता है.....कपड़े में ही...छि: छि: इनको शर्म हया कुछ नहीं आती?' फिर कुछ अक्सर दोस्तों के बीच बोली जानेवाली गालियों की झड़ी से दोस्तों का नया साल शुरू हुआ। कमरे से घिनौनी गंध आ रही थी। फर्श पर पूरी रात पड़े होने के कारण उनको सर्दी लगी थी, बुखार चढ़ने लगा था। इधर दोस्त की बीबी, घर की मालकिन दरवाजे के सामने रुद्ररूप में खड़ी होकर चुन-चुनकर एक से बढ़कर एक गालियाँ दे रही थी।

3

'ये सी एम सब ठीक कर रहे हैं। पर हमारे अधिकार पर हाथ डाला जा रहा है...बस यह ठीक नहीं है। आज तक असम के इतिहास में ऐसा कभी नहीं हुआ कि थर्टी फर्स्ट की रात को इतनी रोक लगी हो।' लड़खड़ाती आवाज में वह बोला।

'सी एम होगा तेरे लिए।हमारे लिए तो भैया है...दादा। दादा बहुत अच्छे हैं।'

'दादा होगा तेरे चुनाव क्षेत्र में। अब वह सी एम है। आज वह किसी की नहीं सुननेवाला। ठान ले तो वह अपनी भी नहीं सुनता। मेरी मान ...तुझ पर चढ़ गया है। रात को यही रुक जा।'

'यही तो मजा है सी एम के क्षेत्र से होने का। रास्ते में पुलिसवाला पकड़ लेगा तो दादा का नाम लेकर झट से निकल जायूंगा'- कहते हुए दूसरे दोस्त ने बाइक चला दी।

'सावधानी से जाना दोस्त ।तेरे दादा ने इसबार थर्टी फर्स्ट को आक्सीडेंट फ्री करने की कसम खायी है। '

बाइक आगे निकल चुकी थी तो पहले दोस्त ने क्या कहा उसे सुनाई नहीं पड़ी। वह गुनगुनता रहा 'आहिछे आहिछे ... आहिछे आशारे बतरा लै.....'

गली से निकलकर वह बड़ी सड़क पर चढ़ा ही था कि एक पुलिसवाले ने उसकी बाइक रोक ली। हेलमेट उतारकर वह बोला- 'देखिए मैं सी एम के....'

'हमें कुछ नहीं पता। यह सी एम सर का आदेश है।' कहता हुआ पुलिसवाले ने ब्रेथ एनालाइजर मशीन को उसके मुँह में ठूस दिया। पारा 200 सौ पार हो गया। इसी बीच उसकी नजर पुलिस की टुकड़ी के पास खड़े सी एम पर पड़ी। वह बड़ी आशा से उनके पास जाकर कहने लगा- 'दादा, नये साल की ढेर सारी शुभकामनाएँ।'

सी एम ने कुछ जवाब नहीं दिया। वे ब्रेथ एनालाइजर टेस्ट में पास करनेवालों को नये साल की बधाई देने में व्यस्त थे। वह फिर से बोला- 'दादा, मैं मण्डल का संपादक।...बौ कैसी है..... मेरी बेटी आपको बहुत याद करती है.... मामा मामा का रट लगाती रहती है...उस मीटिंग में आपने उसे गोद में उठा लिया था न.....दादा आप बहुत अच्छे हैं... हम आपके साथ हैं...आप और तरक्की करें...आप सी एम से पी एम बनें....'

'मैं अभी ड्यूटी में हूँ' कहकर उन्होंने पास खड़े पुलिसवाले को उसे वहाँ से ले जाकर कारवाई करने का इशारा किया।

उसके बाद सारी रात वह सी एम को बाइक के पीछे बैठाकर गुवाहाटी,उत्तर गुवाहाटी,शुवालकुछि आदि का सैर कराता रहा।सुबह बीबी की आवाज में उसकी नींद खुली। तब तक उसका नशा उतार चुका था।

'तू कहाँ से आयी? और दादा कहाँ गये? रात को तो मेरी बाइक के पीछे बैठे थे!'

'कोई आपकी बाइक के पीछे नहीं बैठे थे। वे सी एम हैं, पूरे देश को चलाना पड़ता है। आप जैसे शराबी की बाइक के पीछे बैठकर घूमने का उनके पास समय भी नहीं है और गरज भी। दादा ने शराब पीकर गाड़ी चलाने को मना किया था,क्यों नहीं माने?'

'मुझे लगा हमारे दादा सी एम बने हैं। हमारा सात खून माफ है।'

'आपलोगों को छूट देंगे तो बाकी लोगों को कैसे संभालेंगे? समाचार पत्र में

नहीं निकलेगे कि सी एम अपने लोगों के खिलाफ कार्रवाई नहीं करते?'

'तू सही कहती है।'

'आपको पता है कि पहली बार थर्टी फर्स्ट की रात को न कोई दुर्घटना हुई, न कोई मरा।'

'यह तो बड़ी अच्छी खबर है।कमाल हो गया।' उसने बड़ी उत्साह से कहा। पर उसके उत्साह को पत्नी का साथ नहीं मिला। वह चुप थी।

'क्या हुआ?'

'आपको यहाँ से निकालने के लिए मुन्नी के लिए रखी स्कूल फीस देनी पड़ी।'

'तो मुन्नी का दाखिला नहीं करा पायूंगा।' उसे बड़ा पश्चाताप हुआ। उसने अपने आप से कहा-'आइंदा ऐसा कभी नहीं होगा। मैं शराब पीना छोड़ दूंगा।'

इसी पुलिस चौकी में जरूरत कागजात पर दस्तखत हो चुके थे। वह बीबी के साथ निकलकर बाइक की ओर चला।

'फीस का सारा पैसा मैंने बर्बाद किया। भारी नुकसान हो गया।' उसने कहा।

बाइक की पिछली सीट पर बैठकर प्यार से उसके कंधे पर सर रखकर बीबी बोली- 'नुकसान नहीं लाभ हुआ।'

'कैसे?

'दादा ने भाइयों को बचा लिया है...आप मुझे मिल गये, पूरी तरह।'

4

नियम बनाना जितना सहज है, उनका पालन करना उतना ही मुश्किल। नियम बननेवालों का दिमाग जितना चलता है, नियम तोड़नेवालों का दिमाग उससे कुछ आगे ही चलना चाहता है। थर्टी फर्स्ट के दिन दो दोस्त पार्टी के बाद इसी विश्वास के साथ घर के लिए रवाना हुए।

'दोस्त! अगर पुलिसवाला पकड़ लेता है तो क्या होगा?पहले दोस्त ने शंका जतायी।

'नहीं पकड़ पायेगा।' दूसरे दोस्त ने भरोसा दिया।

'इतनी पी है कि बार-बार गले से बाहर निकलने की तैयारी कर रही है यह शराब। हमें तो टेस्ट करने की भी जरूरत

नहीं पड़ेगी।शराब खुद बाहर निकलकर कह देगी-यस सर, आइ एम प्रेजेंट हियर।'

अरे पुलिस को भी तो आज की रात पार्टी करनी है । रास्ते में कोई भी नहीं रहेगा। डरा-धमकाकर हमें बेवकूफ बना रहे हैं सब। कहता हुआ दूसरे दोस्त ने गाने की आवाज बढ़ा दी- इट्स माइ लाइफ...

गाड़ी ने तेज रफ्तार पकड़ी ही थी कि अचानक ब्रेक मार दी गयी। दोनों दोस्तों ने देखा कि सामने पुलिस की एक बड़ा दल चेकिंग में लगा है। दोनों दोस्तों ने एक दूसरे की तरफ इस नजर से देखा कि आखिर क्या होगा? गाड़ी का स्टार्ट बंद कर दिया गया और दोनों धीरे से ड्राइविंग और पासवाली सीट से गाड़ी के अंदर से सरककर पिछली सीट पर विराजमान हो गये। उनके सामने की गाडियाँ आगे निकल चुकी थीं। उनकी गाड़ी जब एक ही जगह पर खड़ी रही, तो पीछे की गाड़ियों के हार्न बजने लगे। सामने से एक पुलिस के अफसर भाग कर आते हुए बोले-

'अरे क्या कर रहे हैं? गाड़ी को आगे बढ़ाइए। पीछे भीड़ लगी है।' बात खत्म होते-होते वे गाड़ी के बिलकुल पास आकार खड़े हो गये। थोड़ा झुककर उन्होंने गाड़ी के अंदर झाँका और पूछा- 'सुना नहीं मैं क्या कह रहा हूँ? शराब पी रखी है क्या?'

'सच बताया सर। हम दोनों ने थोड़ी-थोड़ी पी है।' एक ने कहा।

'तो चलिए। हमारा मेहमान बनिए।' अफसर ने उन्हें इशारे से गाड़ी उतरने को कहा।

'हमने शराब पी है, पर गाड़ी नहीं चलायी है।'

'तो गाड़ी खुद चलकर यहाँ आयी?'

'नहीं हमारा ड्राइवर लाया। उसने भी थोड़ी पी रखी थी। आप सबको देखा तो मारे डर के भाग गया।' इसबार दूसरे ने जवाब दिया।

'तो अब क्या होगा?'

'एक ड्राइवर का बंदोवस्त दीजिए न सर।'

'यह कैसे संभव है? आपमें से किसी को गाड़ी चलानी आती है?' अफसर ने पूछा।

'जी हाँ,आती है।' दोनों ने एक साथ कहा।

तो कोई एक आकार गाड़ी को थोड़ा साइड में लगा दीजिए।'

'बापरे बाप, क्या कहते हैं आप? पुलिसवाला होकर आप नियम तोड़ने की

बात करते हैं? सी एम सर ने इतना मना किया है...नहीं , यह गलत काम हमसे नहीं होगा।' पहले दोस्त ने कहा।

'देखिए, यह मामला कुछ और है। कुछ नहीं होगा, गाड़ी को थोड़ा आगे साइड कर दीजिए।'

'ठीक है अगर आप कह रहे हैं तो... पर थोड़ी दूरी पर ही हमारा घर है। अगर आप हमें इजाजत दें तो वहीं तक ले जा सकते हैं।'

'ठीक है ले जाइए।'

'आगे और पुलिस पकड़े तो?' पहले ने कहा।

'नहीं पकड़ेगी।'

'पकड़ने से आपका नाम लूँगा।' दूसरे ने कहा।

हाँ ,हाँ ले लीजिएगा । जाइए ... जाइए।'

'हेप्पी न्यू इयर।' दोनों दोस्त खुशी से चिल्ला पड़े। गाड़ी फिर से चल पड़ी ।

5

दो साल के बाद बेटा थर्टी फर्स्ट में घर में है। दरअसल में उसकी शादी की बात चल रही है। लड़की को देखने वह आया था। मल्टीनेशनल कंपनी में वह नौकरी करता है। काफी व्यस्त रहता है। इसबार किसी तरह चार दिन की छुट्टी पर वह घर पहुँचा है। पर उसे क्या पता था कि इस बार थर्टी फ़र्स्ट के नियम कुछ और हो गये हैं । आते समय वह विदेशी कंपनी की कुछ बोतलें ले आया था। विविध रंग-विरंगी बोतलों से एक कार्टून भर गया था। गुवाहाटी पहुँचकर उसे पता चला कि ड्राइव विथ ड्रिंक के खिलाफ यहाँ नियम बनाया गया है। बाबू जी के सामने पीने की न उसे हिम्मत थी । बड़े सख्त हैं बाबूजी। चेहरा देखकर पेट की बात उगाल लेते हैं। हमेशा नियम में रहनेवाले...बड़े भक्त स्वभाव के हैं। वे अपने धर्म के खिलाफ कुछ भी नहीं करते। तो घर में शराब...ना बाबा ना। शेर के मुँह में वह जा सकता है,पर बाबूजी के कोप का सामना वह नहीं कर सकता।

दोपहर को खाते समय बेटे ने कहा – 'बाबूजी , मुझे बहुत काम है। मैं अपने दोस्त के यहाँ रात को रहूँगा। कुछ टार्गेट पूरे करने हैं।'

बेटे की योजना रात को होटल में काटने की थी। अपने दो-चार दोस्तों को बुलाकर वहीं थोड़ी मस्ती करेगा।

मोटी आवाज में बाबूजी बोले- 'जरूरत नहीं है। चार दिने के लिए आया है। वह भी इतने सालों के बाद। और जो भी काम हो यही कर लें। बुला ले अपने दोस्तों को।' माँ ने भी हामी भरी तो बेटे के पास कोई दूसरा रास्ता नहीं बचा। वह कुछ समय तक चुप रहा। दोस्तों को यहाँ बुलाकर भजन-कीर्तन करना तो नहीं है उसे। बाबूजी ने फिर कहा-' क्या हुआ?"

'कुछ नहीं। आप ठीक कह रहे हैं। आज कहीं नहीं जायूंगा।आपलोगों के साथ रहूँगा।' उसने दिल पर पत्थर रखकर ये बात कही।

बड़े भारी मन से उसने कहा और वह गेराज की ओर निकल गया। गेराज में गाड़ी की डिक्की खोलकर उसने कार्टून पर नजर फेरी। हाय... यह भी कैसा दिन है...इतनी बोतलें उसके साथ हैं और वह पी नहीं पा रहा है। उसकी अवस्था समुद्र में रहकर पानी के तरसनेवाले की तरह हो गयी।

वह अंदर आया। कुछ अनमना सा बैठा रहा...चुपचाप गेराज की तरह गया...डिक्की खोलकर प्यारी बोतलों को देखा...फिर कमरे में आ गया। इसतरह आते-जाते रात हो गयी और खाना खाकर वह सो गया।

रात को उसे अच्छी नींद नहीं आयी।कुछ अधूरी सी , कुछ खाली सी वह थर्टी फर्स्ट रही। सुबह उठकर सबसे पहले वह गेराज में जाकर डिक्की खोलता है। बड़ी ही निराशा उसके हाथ लगती है....और साथ में वह आश्चर्यचकित होता है। कार्टून वहाँ से गायब था। वह कुछ सोचता हुआ तेजी से घर की ओर बढ़ा। सामने बाबूजी मिले। उन्होंने प्यार से हँसते हुए कहा-'आज नींद बड़ी अच्छी आयी।'

बेटे ने आश्चर्य से बाप को देखा। उन्होंने पूछा-'क्या हुआ?'

शांत भाव से बेटा बोला-'कुछ नहीं।'

संपर्क-सूत्र:

विभागाध्यक्ष एवं सहयोगी प्राध्यापक

हिंदी विभाग, गौहाटी विश्वविद्यालय

ritamonibaishya841@gmail.com